इस्लाम और विज्ञान: क्या वास्तव में कोई टकराव है ?

इस्लाम और विज्ञान: क्या वास्तव में कोई टकराव है ?

हर प्रकार की प्रशंसा एवं गुणगान केवल अल्लाह के लिए योग्य है, तथा दुरूद व सलाम की वर्षा हो अल्लाह के रसूल पर।

आज के युग में यह प्रश्न बार-बार उठाया जाता है कि क्या इस्लाम विज्ञान, अनुसंधान और नए आविष्कारों का विरोध करता है? कुछ लोग यह समझते हैं कि धार्मिक आस्था और वैज्ञानिक सोच एक-दूसरे के विपरीत हैं। लेकिन जब हम क़ुरआन, सहीह सुन्नत और प्रारम्भिक इस्लामी इतिहास का अध्ययन करते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि इस्लाम ज्ञान, चिंतन, अवलोकन, अनुसंधान और मानव-हितकारी विकास को प्रोत्साहित करता है।

यह धारणा कि इस्लाम विज्ञान और नए आविष्कारों का विरोध करता है, न तो क़ुरआन से सिद्ध होती है और न ही सहीह सुन्नत तथा इस्लामी इतिहास से। इस्लाम ने ज्ञान, निरीक्षण, अनुभव, चिकित्सा, लेखन, गणना, यात्रा, कृषि, उद्योग और मानव-हितकारी विकास को प्रोत्साहित किया है।

इस्लाम का उद्देश्य केवल आध्यात्मिक मार्गदर्शन देना नहीं, बल्कि मनुष्य को सोचने, समझने और अल्लाह की बनाई हुई सृष्टि में मौजूद निशानियों पर विचार करने के लिए प्रेरित करना भी है। क़ुरआन का उद्देश्य विज्ञान की पाठ्यपुस्तक बनना नहीं है, बल्कि मानव बुद्धि को सक्रिय करना और उसे अल्लाह की सृष्टि में चिंतन करने के लिए प्रेरित करना है। इसी कारण क़ुरआन में बार-बार "सोचने", "समझने", "देखने", "ज्ञान रखने" और "धरती में चलकर अध्ययन करने" का आदेश मिलता है।

1. क़ुरआन का पहला संदेश ही ज्ञान से संबंधित है

अल्लाह तआला फरमाता है :

اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ (1) خَلَقَ الْإِنسَانَ مِنْ عَلَقٍ (2) اقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ (3) الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ (4) عَلَّمَ الْإِنسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ (5)

"पढ़ो, अपने रब के नाम के साथ जिसने पैदा किया, पैदा किया मनुष्य को जमे हुए ख़ून के एक लोथड़े से। पढ़ो, हाल यह है कि तुम्हारा रब बड़ा ही उदार है, जिसने क़लम के द्वारा शिक्षा दी, मनुष्य को वह

ज्ञान प्रदान किया जिसे वह न जानता था।" [सूरह अल-अलक़ 96:1–5]

यह इस्लाम की पहली वह्य है। ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि पहली ही वह्य में युद्ध, राजनीति या अर्थव्यवस्था की चर्चा नहीं, बल्कि पढ़ने, लिखने और सीखने की चर्चा है। यहाँ "القلم" **(कलम)** का उल्लेख विशेष महत्व रखता है। कलम ज्ञान के संरक्षण, प्रसार और विकास का साधन है। सम्पूर्ण वैज्ञानिक और बौद्धिक सभ्यता लेखन और अभिलेखन पर आधारित होती है। इसलिए यह कहना कि इस्लाम ज्ञान-विरोधी है, उस पहली वह्य के प्रतिकूल है जिससे इस्लामी संदेश का आरम्भ हुआ।

2. क़ुरआन प्रकृति और ब्रह्मांड के अध्ययन का आह्वान करता है

अल्लाह तआला फरमाता है:

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيَاتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ

"निश्चय ही आकाशों और धरती की रचना तथा रात और दिन के परिवर्तन में बुद्धि वालों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं।" [सूरह आल-इमरान 3:190]

यह आयत मनुष्य को आकाशों और धरती की रचना पर विचार करने की प्रेरणा देती है। आकाश, ग्रह, तारे, दिन-रात का क्रम, ऋतुएँ और प्राकृतिक नियम—ये सब चिंतन के विषय बनाए गए हैं। यदि प्राकृतिक जगत का अध्ययन अनुचित होता, तो अल्लाह स्वयं मनुष्य को इन विषयों पर विचार करने का आदेश न देता। खगोलशास्त्र, भूविज्ञान, मौसम विज्ञान और अनेक प्राकृतिक विज्ञान इसी प्रकार के निरीक्षण और अध्ययन से विकसित हुए हैं।

और फ़रमाते है :

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ بَدَأَ الْخَلْقَ ۚ ثُمَّ اللَّهُ يُنشِئُ النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

"कह दीजिए : धरती में चलो और देखो कि सृष्टि की शुरुआत कैसे हुई।" [सूरह अल-अनकबूत 29:20]

यह केवल यात्रा का आदेश नहीं, बल्कि अध्ययन, अवलोकन और अनुसंधान का आदेश है।

3. क़ुरआन बार-बार चिंतन का आदेश देता है

अल्लाह तआला फरमाता है :

أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ ۚ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِندِ غَيْرِ اللَّهِ لَوَجَدُوا فِيهِ اخْتِلَافًا كَثِيرًا

"क्या वे क़ुरआन में सोच-विचार नहीं करते? यदि यह अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की ओर से होता, तो निश्चय ही वे इसमें बहुत-सी बेमेल बातें पाते।" [सूरह अन-निसा 4:82]

अल्लाह तआला क़ुरआन में अनेक स्थानों पर फरमाता है :

كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ

"इसी तरह हम उन लोगों के लिए खोल-खोलकर निशानियाँ बयान करते हैं, जो सोच-विचार से काम लेना चाहें।" [सूरह यूनुस 10:24]

وَهُوَ ٱلَّذِى مَدَّ ٱلْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَٰسِىَ وَأَنْهَٰرًا ۖ وَمِن كُلِّ ٱلثَّمَرَٰتِ جَعَلَ فِيهَا زَوْجَيْنِ ٱثْنَيْنِ ۖ يُغْشِى ٱلَّيْلَ ٱلنَّهَارَ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَٰتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ٣

"और वही है जिसने धरती को फैलाया और उसमें जमे हुए पर्वत और नदियाँ बनाईं और हरेक पैदावार की दो-दो क़िस्में बनाईं। वही रात से दिन को छिपा देता है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार से काम लेते हैं।" [सूरह अर-रअद 13:3]

और फरमाता है :

وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافُ أَلْسِنَتِكُمْ وَأَلْوَانِكُمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْعَالِمِينَ

"और उसकी निशानियों में से आकाशों और धरती का सृजन और तुम्हारी भाषाओं और तुम्हारे रंगों की विविधता भी है। निस्संदेह इसमें ज्ञानवानों के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं।" [सूरह अर-रूम 30:22]

क़ुरआन में "सोचो", "समझो", "ज्ञान प्राप्त करो", "विचार करो" जैसी अभिव्यक्तियाँ बार-बार आती हैं। यह शैली किसी ऐसे धर्मग्रंथ की नहीं हो सकती जो बुद्धि और ज्ञान का विरोधी हो।

4. ज्ञान वालों की श्रेष्ठता

अल्लाह तआला फरमाता है :

قُلْ هَلْ يَسْتَوِى ٱلَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَٱلَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ

"क्या जानने वाले और न जानने वाले बराबर हो सकते हैं ?" [सूरह अज़-ज़ुमर 39:9]

यह आयत ज्ञान की महानता को स्पष्ट करती है।

अल्लाह तआला फरमाता है:

يَرْفَعِ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مِنكُمْ وَٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْعِلْمَ دَرَجَٰتٍ

"अल्लाह तुममें से ईमान वालों और ज्ञान दिए गए लोगों के दर्जे ऊँचे करेगा।" [सूरह अल-मुजादिला 58:11]

यह आयत बताती है कि ज्ञान मनुष्य की प्रतिष्ठा को ऊँचा करता है।

अल्लाह तआला फरमाता है:

وَقُل رَّبِّ زِدْنِى عِلْمًۭا

"और कहो, 'मेरे रब, मुझे ज्ञान में अभिवृद्धि प्रदान कर।" [सूरह ताहा 20:114]

पूरे क़ुरआन में केवल ज्ञान ही ऐसी चीज़ है जिसके लिए सीधे बढ़ोतरी की दुआ सिखाई गई है। यह ज्ञान के महत्व को दर्शाता है।

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया:

مَنْ سَلَكَ طَرِيقًا يَبْتَغِي فِيهِ عِلْمًا سهَّل اللَّه لَه طَرِيقًا إِلَى الجنةِ

"जो व्यक्ति ज्ञान की तलाश में कोई मार्ग अपनाता है, अल्लाह उसके लिए जन्नत का मार्ग आसान कर देता है।" [सहीह मुस्लिम, हदीस 2699]

और एक रिवायता में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया:

مَنْ يُرِدِ اللَّهُ بِهِ خَيْرًا يُفَقِّهْهُ فِي الدِّينِ

"अल्लाह जिसके साथ भलाई का इरादा करता है, उसे दीन की समझ प्रदान करता है।" [सहीह अल-बुखारी, हदीस 71, सहीह मुस्लिम, हदीस 1037]

5. बिना ज्ञान के किसी बात का अनुसरण न करना

अल्लाह तआला फरमाता है :

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ

"जिस बात का तुम्हें ज्ञान नहीं, उसके पीछे मत चलो।" [सूरह अल-इसरा 17:36]

यह आयत प्रमाण, तर्क और सत्यापन की शिक्षा देती है। वैज्ञानिक पद्धति भी निरीक्षण, परीक्षण और प्रमाण पर आधारित होती है।

6. मानव शरीर के अध्ययन की प्रेरणा

अल्लाह तआला फरमाता है :

وَفِي الْأَرْضِ آيَاتٌ لِّلْمُوقِنِينَ (20) وَفِي أَنفُسِكُمْ ۚ أَفَلَا تُبْصِرُونَ

"धरती में यक़ीन रखने वालों के लिए निशानियाँ हैं, और स्वयं तुम्हारे भीतर भी; क्या तुम देखते

नहीं ?” [सूरह अज़-ज़ारियात 51:20–21]

यह आयत मनुष्य को केवल बाहरी संसार नहीं बल्कि अपने शरीर और अस्तित्व पर भी विचार करने को कहती है।

इससे संबंधित क्षेत्र:

- शरीर विज्ञान
- चिकित्सा विज्ञान
- जैविकी
- आनुवंशिकी

मानव शरीर, उसकी संरचना, रक्त संचार, तंत्रिका तंत्र और जैविक प्रक्रियाएँ आज चिकित्सा विज्ञान के प्रमुख विषय हैं।

7. चिकित्सा और वैज्ञानिक अनुसंधान को प्रोत्साहन

इस्लाम बीमारी को केवल भाग्य मानकर बैठ जाने की शिक्षा नहीं देता, बल्कि उपचार खोजने, कारणों को समझने और उपलब्ध साधनों का उपयोग करने की शिक्षा देता है। यही कारण है कि चिकित्सा अनुसंधान और रोगों के उपचार की खोज इस्लामी दृष्टिकोण से एक प्रशंसनीय कार्य है।

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया:

ما أنزل الله داءً إلا أنزل له شفاءً

“अल्लाह ने कोई रोग नहीं उतारा, सिवाय इसके कि उसके लिए उपचार भी उतारा।”

[सहीह अल-बुखारी, हदीस 5678]

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया:

«تَدَاوَوْا عِبَادَ اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ لَمْ يَضَعْ دَاءً إِلَّا وَضَعَ لَهُ دَوَاءً»

“अल्लाह के बंदो! उपचार करो, क्योंकि अल्लाह ने कोई रोग ऐसा नहीं उतारा जिसके लिए उपचार न रखा हो।” [सुनन अबू दाऊद, हदीस 3855, जामिअ तिर्मिज़ी, हदीस 2038]

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया:

إِنَّ الله لم ينزل داء إِلّا أنزل شِفَاءً، عَلِمَهُ مَنْ عَلِمَهُ وَجَهِلَهُ مَنْ جَهِلَهُ

“अल्लाह ने कोई रोग नहीं उतारा, सिवाय इसके कि उसके लिए उपचार भी उतारा है ; कुछ लोग उसे जानते हैं और कुछ नहीं जानते।” [मुस्नद अहमद, हदीस 3578]

इन हदीसों से स्पष्ट होता है कि रोगों के उपचार की खोज करना इस्लाम की भावना के अनुरूप है। यदि हर रोग के लिए उपचार मौजूद है, तो उस उपचार को खोजने के लिए अनुसंधान, प्रयोग और चिकित्सा विज्ञान का विकास भी आवश्यक है। इसी सोच ने मुस्लिम समाज में चिकित्सा, औषधि निर्माण और रोगों के वैज्ञानिक अध्ययन को प्रोत्साहित किया।

8. प्रकृति के अध्ययन का सीधा आदेश

अल्लाह तआला फरमाता है :

أَفَلَا يَنظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ (17) وَإِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ (18) وَإِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ (19) وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ (20)

"क्या वे ऊँट की ओर नहीं देखते कि उसे कैसे बनाया गया? और आकाश की ओर कि उसे कैसे ऊँचा उठाया गया? और पर्वतों की ओर कि उन्हें कैसे स्थापित किया गया? और धरती की ओर कि उसे कैसे बिछाया गया?" [सूरह अल-गाशियह 88:17–20]

यहाँ अल्लाह ने मनुष्य को चार महत्वपूर्ण विषयों पर विचार करने के लिए कहा है :

- जीव-जगत
- आकाशीय व्यवस्था
- पर्वतीय संरचना
- धरती की संरचना

ध्यान देने योग्य बात यह है कि आयत का आरम्भ **"أَفَلَا يَنْظُرُونَ"** अर्थात "क्या वे देखते नहीं?" से होता है। यह निरीक्षण, अवलोकन और अध्ययन की प्रेरणा है। आज जीवविज्ञान, भूविज्ञान, पर्यावरण विज्ञान और अन्य प्राकृतिक विज्ञान इसी प्रकार के अध्ययन पर आधारित हैं।

9. समय गणना और खगोलशास्त्र

अल्लाह तआला फरमाता है :

هُوَ الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ نُورًا وَقَدَّرَهُ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ

"उसने सूर्य को प्रकाशमान और चन्द्रमा को प्रकाश बनाया और उसकी अवस्थाएँ निर्धारित कीं ताकि तुम वर्षों की गणना और हिसाब जान सको।" [सूरह यूनुस 10:5]

यह आयत निम्न बातों की उपयोगिता को स्वीकार करती है :

- कैलेंडर
- समय मापन
- खगोलीय गणना

- वर्ष और महीनों की गणना

इससे स्पष्ट होता है कि समय और आकाशीय पिंडों का अध्ययन मानव जीवन के लिए महत्वपूर्ण है।

10. विशेषज्ञता का सम्मान

मदीना में खजूर के पेड़ों के परागण का मामला आया। बाद में रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया :

أنتُم أعلَمُ بأمرِ دُنياكُم

"तुम अपने सांसारिक मामलों को अधिक जानते हो।" [सहीह मुस्लिम, हदीस 2363]

यह हदीस अत्यंत महत्वपूर्ण है। इससे पता चलता है कि कृषि, उद्योग, तकनीक, चिकित्सा और अन्य सांसारिक क्षेत्रों में विशेषज्ञता रखने वालों की विशेषज्ञता का सम्मान किया जाना चाहिए। यही वह सिद्धांत है जिस पर आधुनिक विशेषज्ञता आधारित है। इसका अर्थ यह नहीं कि दीन के मामलों में वह्य की आवश्यकता समाप्त हो जाती है, बल्कि इसका अर्थ यह है कि तकनीकी और व्यावहारिक विषयों में अनुभवी लोगों की राय को महत्व दिया जाए।

11. योग्यता आधारित व्यवस्था

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया:

إذا وسِّدَ الأمرُ إلى غَيرِ أهلِه فانتَظِرِ السَّاعةَ

"जब कोई कार्य उसके योग्य व्यक्ति के बजाय किसी अयोग्य व्यक्ति को सौंप दिया जाए, तो विनाश की प्रतीक्षा करो।" [सहीह अल-बुखारी, हदीस 59]

यह हदीस विशेषज्ञता, योग्यता और जिम्मेदारी के सिद्धांत को स्थापित करती है। आधुनिक विज्ञान, चिकित्सा, अभियान्त्रिकी, न्याय और प्रशासन की सफलता भी इसी सिद्धांत पर आधारित है कि प्रत्येक कार्य योग्य व्यक्ति को सौंपा जाए।

12. उपयोगी ज्ञान की अवधारणा

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया:

اللَّهمَّ إنِّي أسألُكَ عِلمًا نافعًا،

"ऐ अल्लाह! मैं तुझसे लाभदायक ज्ञान का प्रश्न करता हूँ।" [सुनन इब्न माजह, हदीस 925]

इस्लाम केवल ज्ञान प्राप्त करने की बात नहीं करता, बल्कि ऐसे ज्ञान की बात करता है जो मनुष्य और समाज को लाभ पहुँचाए।

एक दूसरी रिवायत में है:

الكلمةُ الحِكْمَةُ ضالَّةُ المؤمنِ ، فحَيْثُ وجدها فهو أَحَقُّ بها

"हिकमत (उपयोगी ज्ञान) मोमिन की खोई हुई चीज़ है, जहाँ भी वह उसे पाए, वह उसका अधिक हक़दार है।" [जामिअ तिर्मिज़ी, हदीस 2687]

[**हुक्म:** इमाम तिर्मिज़ी ने इसे "ग़रीब" कहा है और इसकी सनद में कमजोरी बताई है। फरमाते हैं : "यह हदीस ग़रीब है। हम इसे इसी सनद से जानते हैं, और इब्राहीम बिन अल-फ़ज़्ल को उनकी याददाश्त के कारण हदीस में कमज़ोर माना गया है।"]

यह हदीस इस बात की ओर संकेत करती है कि उपयोगी ज्ञान किसी भी स्थान से प्राप्त हो, उसे अपनाना और उससे लाभ उठाना उचित है। इसी कारण मुस्लिम विद्वानों ने विभिन्न सभ्यताओं के ज्ञान का अध्ययन किया और उसे आगे विकसित किया।

13. हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और प्रशासनिक नवाचार

खुलफ़ाए राशिदीन के काल में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अनेक प्रशासनिक सुधार किए, जिनमें शामिल हैं:

- बैतुल माल की व्यवस्थित स्थापना
- जनगणना और वेतन व्यवस्था
- न्यायिक व्यवस्था का विस्तार
- हिजरी पंचांग का निर्धारण
- प्रशासनिक विभागों की स्थापना

ऐतिहासिक संदर्भ

- इमाम तबरी, तारीखुत-तबरी
- इब्न कसीर, अल-बिदायह वन-निहायह

ये व्यवस्थाएँ उसी रूप में नबी ﷺ के समय मौजूद नहीं थीं, लेकिन समाज की आवश्यकता के अनुसार अपनाई गईं। यदि हर नई व्यवस्था निषिद्ध होती, तो ये सुधार कभी लागू नहीं किए जाते। इससे स्पष्ट होता है कि समाज के हित में होने वाले और शरई सिद्धांतों से न टकराने वाले नए उपाय स्वीकार्य हैं।

14. सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का व्यावहारिक दृष्टिकोण

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अपने समय की आवश्यकताओं के अनुसार अनेक उपयोगी कार्य किए :

- नए नगर बसाए
- प्रशासनिक संरचनाएँ विकसित कीं

- पुल और सड़कें बनवाईं
- सिंचाई की व्यवस्थाएँ विकसित कीं
- अभिलेख और सरकारी रिकॉर्ड तैयार किए

इन कार्यों को इसलिए स्वीकार किया गया क्योंकि वे समाज के हित में थे और शरई सिद्धांतों से टकराते नहीं थे।

यह इस बात का प्रमाण है कि इस्लाम लाभकारी विकास और संगठनात्मक सुधारों का विरोध नहीं करता।

15. हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु द्वारा क़ुरआन की मानकीकृत प्रतियाँ

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुसलमानों को एक मानक मुसहफ़ पर एकत्र किया और उसकी प्रतियाँ विभिन्न क्षेत्रों में भेजीं। जैसा कि इस रिवायत में है:

«فَأَرْسَلَ إِلَى حَفْصَةَ أَنْ أَرْسِلِي إِلَيْنَا بِالصُّحُفِ»

"उन्होंने हफ़्सा (रज़ि.) को संदेश भेजा कि लिखित पृष्ठ हमारे पास भेज दें।" [सहीह अल-बुखारी, हदीस 4987]

यह ज्ञान के संरक्षण का एक महान प्रशासनिक और बौद्धिक कार्य था। इस कार्य के माध्यम से क़ुरआन की शुद्धता और एकरूपता को सुरक्षित रखा गया, जिससे आने वाली पीढ़ियों तक अल्लाह का कलाम सुरक्षित रूप से पहुँच सका।

16. इस्लामी सभ्यता और विज्ञान

इस्लामी इतिहास इस बात का जीवंत प्रमाण है कि जब मुसलमानों ने क़ुरआन और सुन्नत की ज्ञान-आधारित शिक्षाओं को अपनाया, तो उन्होंने शिक्षा, अनुसंधान, चिकित्सा, गणित, खगोलशास्त्र, भूगोल और अभियान्त्रिकी के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति की।

प्रारम्भिक मुस्लिम समाज ने यूनानी, फ़ारसी और भारतीय ज्ञान का अध्ययन किया, उसका अनुवाद किया और उसे आगे विकसित किया। उन्होंने केवल पूर्ववर्ती ज्ञान को संरक्षित ही नहीं किया, बल्कि उसमें नए योगदान भी दिए।

प्रमुख क्षेत्र

- चिकित्सा विज्ञान
- गणित
- खगोलशास्त्र
- भूगोल

- अभियान्त्रिकी
- कृषि विज्ञान
- औषधि विज्ञान

प्रमुख विद्वान

- इब्न सीना (ابن سينا)
- अल-राज़ी (الرازي)
- अल-ख़्वारिज़्मी (الخوارزمي)
- अल-बिरूनी (البيروني)
- इब्न नफ़ीस (ابن النفيس)

इन विद्वानों ने अस्पताल, पुस्तकालय, वेधशालाएँ और अनुसंधान केन्द्र स्थापित किए तथा मानव ज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

17. इस्लामी चिकित्सा का स्वर्ण युग

इस्लामी सभ्यता में चिकित्सा विज्ञान अत्यंत विकसित हुआ। मुस्लिम चिकित्सकों ने रोगों के अध्ययन, औषधि निर्माण, शल्य चिकित्सा और अस्पताल व्यवस्था में उल्लेखनीय कार्य किए।

प्रमुख विद्वान

इमाम अल-राज़ी (الرازي)

उन्होंने चिकित्सा विज्ञान पर अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे और रोगों के व्यवस्थित अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इब्न सीना (ابن سينا)

उनकी प्रसिद्ध पुस्तक “**القانون في الطب**” कई शताब्दियों तक विश्व के चिकित्सा संस्थानों में पढ़ाई जाती रही।

इब्न नफ़ीस (ابن النفيس)

उन्होंने फुफ्फुसीय रक्त परिसंचरण (Pulmonary Circulation) का वर्णन किया, जो चिकित्सा विज्ञान के इतिहास में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाती है।

प्रमुख ऐतिहासिक ग्रंथ

- “القانون في الطب” — इब्न सीना
- “الحاوي في الطب” — अल-राज़ी
- “شرح تشريح القانون” — इब्न नफ़ीस

इन उपलब्धियों से स्पष्ट होता है कि इस्लामी सभ्यता में चिकित्सा अनुसंधान को महत्व दिया जाता था और यह सब उस ज्ञान-प्रेरक वातावरण में हुआ जिसकी प्रेरणा क़ुरआन और सुन्नत से मिलती थी।

18. गणित और विज्ञान में मुस्लिम योगदान

इस्लामी सभ्यता ने गणित के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रमुख योगदान

- बीजगणित (الجبر) का विकास
- दशमलव प्रणाली के प्रसार में योगदान
- त्रिकोणमिति का विकास
- खगोलीय गणनाओं में सुधार
- गणितीय विधियों का व्यवस्थित विकास

प्रमुख विद्वान

अल-ख़्वारिज़्मी (الخوارزمي)

उनकी प्रसिद्ध पुस्तक :

“الكتاب المختصر في حساب الجبر والمقابلة”

गणित के इतिहास की महत्वपूर्ण पुस्तकों में से एक है।

“अल-जबर” शब्द से ही आधुनिक अंग्रेज़ी शब्द **Algebra** बना।

अल-बिरूनी (البيروني)

उन्होंने भूगोल, खगोलशास्त्र और गणित में महत्वपूर्ण शोध किए तथा विभिन्न सभ्यताओं के ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन किया।

इन योगदानों ने आधुनिक विज्ञान और गणित के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

19. खगोलशास्त्र और वेधशालाएँ

क़ुरआन में बार-बार सूर्य, चन्द्रमा, सितारों और समय की गणना का उल्लेख मिलता है। इसी प्रेरणा के परिणामस्वरूप मुस्लिम विद्वानों ने खगोलशास्त्र के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किए।

मुस्लिम वैज्ञानिकों के प्रमुख कार्य

- ग्रहों की गति का अध्ययन
- सितारों के नक्शे तैयार करना
- समय निर्धारण की विधियों का विकास
- कैलेंडर प्रणाली में सुधार
- खगोलीय उपकरणों का विकास

प्रमुख संस्थान

- मराघा वेधशाला
- बग़दाद का बैतुल-हिक्मा (بيت الحكمة)

इन संस्थानों ने वैज्ञानिक अनुसंधान और ज्ञान के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

20. क्या क़ुरआन ने आधुनिक आविष्कारों की भविष्यवाणी की है ?

एक महत्वपूर्ण सावधानी आवश्यक है।

कुछ लोग दावा करते हैं कि क़ुरआन में स्पष्ट रूप से निम्न चीज़ों का उल्लेख है :

- हवाई जहाज़
- मोबाइल फ़ोन
- इंटरनेट
- उपग्रह
- कंप्यूटर

लेकिन विश्वसनीय इस्लामी विद्वानों की बड़ी संख्या इस प्रकार के दावों को स्वीकार नहीं करती।

क़ुरआन का उद्देश्य किसी आधुनिक तकनीकी उपकरण की सूची प्रस्तुत करना नहीं है। उसका मुख्य उद्देश्य मानवता को मार्गदर्शन देना, ईमान को मजबूत करना और चिंतन की प्रेरणा देना है।

अधिक संतुलित और विद्वतापूर्ण दृष्टिकोण यह है कि :

क़ुरआन ने ज्ञान, अवलोकन, अनुसंधान, अनुभव और मानव-हितकारी विकास के ऐसे सिद्धांत प्रदान

किए हैं जिनके आधार पर मनुष्य विज्ञान और तकनीक में प्रगति कर सकता है।

21. क्या हर नया आविष्कार स्वीकार्य है ?

इस्लाम का सिद्धांत यह नहीं है कि हर नई चीज़ स्वत: अच्छी है, और न ही यह कि हर नई चीज़ स्वत: बुरी है।

बल्कि इस्लाम किसी भी नए साधन, तकनीक या आविष्कार का मूल्यांकन उसके उद्देश्य, प्रभाव और उपयोग के आधार पर करता है।

स्वीकार्य आविष्कार

- जो मानवता के लिए लाभकारी हों
- जो लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करें
- जो जीवन को आसान बनाएं
- जो शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण में सहायता करें
- जो शरई सिद्धांतों से टकराते न हों

अस्वीकार्य उपयोग

- अन्याय
- शोषण
- धोखाधड़ी
- नैतिक भ्रष्टाचार
- मानवता को हानि पहुँचाने वाले कार्य

इस प्रकार इस्लाम विज्ञान का विरोध नहीं करता, बल्कि उसे नैतिक दिशा प्रदान करता है।

22. विज्ञान और नैतिकता

विज्ञान स्वयं यह निर्धारित नहीं करता कि किसी शक्ति का उपयोग कैसे किया जाए।

उदाहरण के लिए :

- वही तकनीक जो जीवन बचा सकती है, विनाश का कारण भी बन सकती है।
- वही ज्ञान जो मानवता की सेवा कर सकता है, अत्याचार का साधन भी बन सकता है।

इस्लाम विज्ञान को नैतिक मूल्यों के साथ जोड़ता है और यह सिखाता है कि ज्ञान का उपयोग मानव कल्याण, न्याय और भलाई के लिए होना चाहिए। इस्लाम का दृष्टिकोण यह है कि विज्ञान और

नैतिकता एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं।

क़ुरआन ज्ञान, चिंतन, निरीक्षण और अध्ययन का आदेश देता है। क़ुरआन मनुष्य को बार-बार सोचने, समझने, देखने और सीखने की ओर बुलाता है। सहीह हदीसें शिक्षा, चिकित्सा, उपयोगी ज्ञान की खोज और विशेषज्ञता के सम्मान को प्रोत्साहित करती हैं। रसूलुल्लाह ﷺ ने विशेषज्ञता का सम्मान किया और यह सिद्धांत स्थापित किया कि सांसारिक मामलों में योग्य और अनुभवी लोगों की भूमिका महत्वपूर्ण है। खुलफ़ाए राशिदीन ने अपने समय की आवश्यकताओं के अनुसार अनेक प्रशासनिक और सामाजिक सुधार लागू किए, जो यह दर्शाते हैं कि लाभकारी नए उपाय अपनाना इस्लाम के विरुद्ध नहीं है। इस्लामी इतिहास यह भी प्रमाणित करता है कि मुस्लिम विद्वानों ने चिकित्सा, गणित, खगोलशास्त्र, भूगोल और अन्य विज्ञानों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अत: यह कहना कि इस्लाम विज्ञान और नए आविष्कारों का विरोध करता है, क़ुरआन, सहीह सुन्नत और इस्लामी इतिहास—तीनों के विपरीत है।

इस्लाम का संदेश स्पष्ट है :

- ज्ञान प्राप्त करो।
- सृष्टि का अध्ययन करो।
- सत्य की खोज करो।
- मानवता को लाभ पहुँचाओ।
- उपयोगी विज्ञान और तकनीक से लाभ उठाओ।
- और यह सब अल्लाह की आज्ञा तथा नैतिक मूल्यों की सीमाओं के भीतर रहकर करो।

इस्लाम और विज्ञान के बीच कोई वास्तविक विरोध नहीं है। विरोध केवल अज्ञानता, अंधविश्वास, बिना प्रमाण के दावों और ज्ञान के दुरुपयोग से है।

क़ुरआन मनुष्य को बार-बार सोचने, देखने, समझने और सीखने की ओर बुलाता है — और यही वह आधार है जिस पर स्वस्थ वैज्ञानिक चिंतन और मानव सभ्यता की प्रगति खड़ी होती है।

और अल्लाह ही बेहतर इल्म वाला है।